

إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ٤

मगर नसीहत सारे जहां के लिये⁶⁸

﴿آياتها ٥٢﴾ ﴿سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ ٨٨﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٢﴾

सूरए हाक्कह मक्किया है, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

الْحَاقَّةُ ١ مَا الْحَاقَّةُ ٢ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ٣ كَذَّبَتْ

वोह हक होने वाली² कैसी वोह हक होने वाली³ और तुम ने क्या जाना कैसी वोह हक होने वाली⁴ समूद और आद ने

شُدُّوْا وَعَادُّوْا بِالْقَارِعَةِ ٤ فَأَمَّا شُدُّوْا فَاهْلِكُوْا بِالطَّاعِنَةِ ٥ وَأَمَّا عَادُّوْا

इस सख्त सदमा देने वाली को झुटलाया तो समूद तो हलाक किये गए हद से गुजरी हुई चिंघाड़ से⁵ और रहे आद

فَاهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرِيْحَةٍ ٦ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَنِيَةً

वोह हलाक किये गए निहायत सख्त गरजती आंधी से वोह उन पर कुवत से लगा दी सात रातें और आठ

أَيَّامٍ ٧ حُسُوْمًا ٨ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى ٩ كَانَتْهُمْ أَعْجَارُ نَخْلٍ

दिन⁶ लगातार तो उन लोगों को उन में⁷ देखो पिछड़े (मरे) हुए⁸ गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने)

خَاوِيَةٍ ١٠ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ١١ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ

हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुआ देखते हो⁹ और फिरऔन और उस से अगले¹⁰

وَالْمُؤْتَفِكُتْ بِالْحَاطَّةِ ١٢ فَعَصُوا رَسُوْلًا رَبِّهِمْ فَآخَذَهُمْ آخِذَةٌ

और उलटने वाली बस्तियां¹¹ खता लाए¹² तो उन्होंने ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना¹³ तो उस ने उन्हें बड़ी चढ़ी

68 : जिनों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या जिक्र ब मा'ना फज्लो शरफ के है इस तकदीर पर मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आलम तमाम जहानों के लिये शरफ हैं इन की तरफ जुनून की निस्वत करना कूर बातिनी है। 1 (मारक) : सूरए हाक्कह मक्किया है, इस में दो 2 रूकूअ, बावन 52 आयतें, दो सो छप्पन 256 कलिमे, एक हजार चार सो तेईस 1423 हर्फ हैं। 2 : या'नी क्रियामत जो हक व साबित है और इस का वुकूअ यकीनी व कर्द है जिस में कोई शक नहीं। 3 : या'नी वोह निहायत अजीब व अजीमुशान है। 4 : जिस के अहवाल व अहवाल और शदाइद तक फिक्रे इन्सानी का ताइर परवाज नहीं कर सकता। 5 : या'नी सख्त होलनाक आवाज से 6 : चहार शम्बा से चहार शम्बा (बुध से बुध) तक, आखिर माहे शव्वाल में निहायत तेज सरदी के मौसिम में 7 : या'नी उन दिनों में 8 : कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया 9 : कहा गया है कि आठवें रोज जब सुब्द को वोह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाकी न रहा। 10 : उस से भी पहली उम्मतों के कुफफार 11 : ना फरमानियों की शामत से मिसल कौमे लूत की बस्तियों के, येह सब 12 : अफ़ाले कबीहा व मअसी व शिक के मुरतकिब हुए 13 : जो उन की तरफ भेजे गए थे।

سَابِئَةٌ ١٠ إِنَّا نَبَا طَعَا الْمَاءَ حَمَلْنَا فِي الْجَارِيَةِ ١١ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ

गिरिफ्त से पकड़ा बेशक जब पानी ने सर उठाया था¹⁴ हम ने तुम्हें¹⁵ कश्ती में सुवार किया¹⁶ कि इसे¹⁷ तुम्हारे लिये

تَذَكْرَةً وَتَعِيهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ١٢ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ

यादगार करें¹⁸ और इसे महफूज़ रखे वोह कान कि सुन कर महफूज़ रखता हो¹⁹ फिर जब सूर फूक दिया जाए

وَاحِدَةٌ ١٣ وَحُصِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ١٣

एक दम और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़अतन चूरा कर दिये जाएं

فِيَوْمٍ مِّنْ ذُنُوبِهِمْ لَنَسَوْنَهَا كَالْحُبَابِ ١٤ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ

वोह दिन है कि हो पड़ेगी वोह होने वाली²⁰ और आस्मान फट जाएगा तो उस दिन उस का पतला

وَأَهِيَّةٌ ١٥ وَالْمَلِكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ

हाल होगा²¹ और फिरिश्ते उस के कनारों पर खड़े होंगे²² और उस दिन तुम्हारे रब का अर्श अपने ऊपर

يَوْمَئِذٍ ثَلَاثِينَ ١٦ يَوْمَئِذٍ تَعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ١٨ فَأَمَّا

आठ फिरिश्ते उठाएंगे²³ उस दिन तुम सब पेश होंगे²⁴ कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी तो वोह

مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَا وَمُراقِدَةٌ وَكِتَابِي ١٩ إِنِّي ظَنَنْتُ

जो अपना नाम आ'माल दहने हाथ में दिया जाएगा²⁵ कहेगा लो मेरे नाम आ'माल पढ़ो मुझे यकीन था

أَنِّي مُلِقٌ حِسَابِي ٢٠ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ٢١ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٢٢

कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा²⁶ तो वोह मन मानते चैन में है बुलन्द बाग़ में

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ٢٣ كَلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ

जिस के खोशे झुके हुए²⁷ खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में

14 : और वोह दरख्तों, इमारतों, पहाड़ों और हर चीज़ से बुलन्द हो गया था, येह बयान तूफ़ाने नूह का है। 15 عَلَيْهِ السَّلَام : जब कि तुम अपने आबा के अस्लाब (पीठों) में थे, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की 16 : और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को और उन के साथ वालों को जो उन पर ईमान लाए थे नजात दी और बाकियों को गर्क किया 17 : या'नी मोमिनीन को नजात देने और काफ़िरों के हलाक फ़रमाने को 18 : कि सबबे इज़त व नसीहत हो 19 : काम की बातों को ताकि उन से नफ़अ उठाए। 20 : या'नी क़ियामत काइम हो जाएगी 21 : या'नी वोह निहायत कमज़ोर होगा बा वुजूद इस के कि पहले बहुत मज़बूत व मुस्तहक़म था। 22 : या'नी जिन फिरिश्तों का मस्कन आस्मान है वोह उस के फटने पर उस के कनारों पर खड़े होंगे, फिर ब हुक्मे इलाही उतर कर ज़मीन का इहाता करेंगे। 23 : हदीस शरीफ़ में है कि हामिलीने अर्श आज कल चार हैं, रोज़े क़ियामत उन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जाएंगे। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि इस से मलाएका की आठ सफ़े मुराद हैं जिन की ता'दाद अब्बास तआला ही जाने। 24 : अब्बास तआला के हुज़ूर हिसाब के लिये 25 : येह समझ लेगा कि वोह नजात पाने वालों में है और निहायत फ़रह व सुरूर के साथ अपनी जमाअत और अपने अहलो

الْخَالِيَةِ ٢٣) وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِشِبَالِهِ ۗ فَيَقُولُ يَلِيَّتِي لَمْ أُوتَ

आगे भेजा²⁸ और वोह जो अपने नाम आ'माल बाएं हाथ में दिया जाएगा²⁹ कहेगा हाए किसी तरह मुझे अपना नविश्ता (नाम आ'माल)

كِتَابِي ۚ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِي ۚ يَلِيَّتَهَا كَانَتْ الْقَاضِيَةَ ۚ مَا

न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है हाए किसी तरह मौत ही किस्सा चुका जाती³⁰ मेरे

أَغْنَى عَنِّي مَالِي ۚ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِي ۚ خُدُوهُ فَعُلُوهُ ۚ لَنْ

कुछ काम न आया मेरा माल³¹ मेरा सब जोर जाता रहा³² उसे पकड़ो फिर उसे तौक डालो³³ फिर

الْجَحِيمِ صَلْوُهُ ۚ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۚ

उसे भड़कती आग में धंसाओ फिर ऐसी जन्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है³⁴ उसे पिरो दो³⁵

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۚ وَلَا يَحْضُرُ عَلَىٰ طَعَامِ الْيَسْكِينِ ۚ

बेशक वोह अजमत वाले **अल्लाह** पर ईमान न लाता था³⁶ और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता³⁷

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ۚ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۚ

तो आज यहां³⁸ उस का कोई दोस्त नहीं³⁹ और न कुछ खाने को मगर दो ज़खियों का पीप

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۚ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۚ وَمَا لَا

इसे न खाएंगे मगर खताकार⁴⁰ तो मुझे कसम उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो और जिन्हें तुम

تُبْصَرُونَ ۚ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۚ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ

नहीं देखते⁴¹ बेशक येह कुरआन एक करम वाले रसूल⁴² से बातें हैं⁴³ और वोह किसी शाइर की बात नहीं⁴⁴

अकारिब से 26 : या'नी मुझे दुन्या में यकीन था कि आखिरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा । 27 : कि खड़े बैठे लैटे हर हाल में ब आसानी ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा 28 : या'नी जो आ'माले सालेहा कि दुन्या में तुम ने आखिरत के लिये किये । 29 : जब अपने नाम आ'माल को देखेगा और उस में अपने बद आ'माल मक्तूब पाएगा तो शरमिन्दा व रुस्वा हो कर 30 : और हिसाब के लिये न उठाया जाता और येह जिल्लतो रुस्वाई पेश न आती 31 : जो मैं ने दुन्या में जम्अ किया था वोह ज़रा भी मेरा अज़ाब टाल न सका 32 : और मैं जलील व मोहताज रह गया । हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने फ़रमाया कि इस से उस की मुराद येह होगी कि दुन्या में जो हुज्जतें मैं किया करता था वोह सब बातिल हो गई अब **अल्लाह** तआला जहन्नम के खाज़िनों को हुक्म देगा 33 : इस तरह कि उस के हाथ उस की गरदन से मिला कर तौक में बांध दो 34 : फ़िरिशतों के हाथ से 35 : या'नी वोह जन्जीर उस में इस तरह दाखिल कर दो जैसे किसी चीज में डोरा पिरोया जाता है । 36 : उस की अजमत व वहदानियत का मो'तकिद न था । 37 : न अपने नपस को न अपने अहल को न दूसरों को । इस में इशारा है कि वोह बअूस का काइल न था क्यू कि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदले को उम्मीद रखता ही नहीं, महज़ रिज़ाए इलाही व सवाबे आखिरत की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो बअूस व आखिरत पर ईमान ही न रखता हो उसे मिस्कीन को खिलाने की क्या गरज़ । 38 : या'नी आखिरत में 39 : जो उसे कुछ नपअ पहुंचाए या शफ़ाअत करे 40 : कुफ़फ़ारे बद अत्वार । 41 : या'नी तमाम मख्तूकात की कसम जो तुम्हारे देखने में आए उस की भी जो न आए उस की भी । बा'ज मुफ़स्सिरी ने फ़रमाया कि "مَا تُبْصَرُونَ" से दुन्या और "مَا لَا تُبْصَرُونَ" से आखिरत मुराद है, इस की तफ़सीर में मुफ़स्सिरी के और भी कई कौल हैं । 42 : मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबे खुदा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** 43 : जो उन के रब **عَزَّوَعَلَى** ने फ़रमाई । 44 : जैसा कि कुफ़फ़ार कहते हैं ।

قَلِيلًا مَّا تَوْمَنُونَ ۝۳۱ وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ ۝ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝۳۲

कितना कम यकीन रखते हो⁴⁵ और न किसी काहिन की बात⁴⁶ कितना कम ध्यान करते हो⁴⁷

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝۳۳ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝۳۴

उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है और अगर वोह हम पर एक बात भी बना कर कहते⁴⁸

لَا خَدْنَا مِنْهُ بِالْبَيِّنِ ۝۳۵ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝۳۶ فَمَا مِنْكُمْ

ज़रूर हम उन से ब कुव्वत बदला लेते फिर हम उन की रगे दिल काट देते⁴⁹ फिर तुम में कोई

مِّنْ أَحَدٍ عَنهُ حَزِينٍ ۝۳۷ وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرَةٌ لِّلشَّاقِينَ ۝۳۸ وَإِنَّا

उन का बचाने वाला न होता और बेशक यह कुरआन डर वालों को नसीहत है और ज़रूर हम

لَنَعْلَمَنَّ أَن مِّنْكُمْ مَّكَذِبِينَ ۝۳۹ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝۴۰ وَ

जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं और बेशक वोह काफ़ि़रों पर हसरत है⁵⁰ और

إِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝۴۱ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝۴۲

बेशक वोह यकीनी हक़ है⁵¹ तो ऐ महबूब तुम अपने अज़मत वाले रब की पाकी बोलो⁵²

﴿ اِيٰتِهَا ۲۴ ﴾ ﴿ سُوْرَةُ الْمُعٰرِجِ مَكِّيَّةٌ ۹ ﴾ ﴿ رُكُوْعَاتِهَا ۲ ﴾

* सूरए मअरिज मक्किय्या है, इस में चवालीस आयतें और दो रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝۱ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝۲ مِّنَ اللّٰهِ

एक मांगने वाला वोह अज़ाब मांगता है जो काफ़ि़रों पर होने वाला है उस का कोई टालने वाला नहीं² वोह होगा अल्लाह की

45 : बिल्कुल बे ईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न येह शे'र है न इस में शे'रियत की कोई बात पाई जाती है 46 : जैसा कि तुम में से बा'जे काफ़िर इस किताबे इलाही की निखत कहते हैं। 47 : न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इस की ता'लीमों पर गौर करते हो कि इस में कैसी रूहानी ता'लीम है न इस की फ़साहतो बलागत और ए'जाजे बे मिसाली पर गौर करते हो जो येह समझो कि येह कलाम 48 : जो हम ने न फ़रमाई होती तो 49 : जिस के काटते ही मौत वाक़ेअ हो जाती है। 50 : कि वोह रोजे क़ियामत जब कुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और इस के इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अपसोस करेंगे और हसरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। 51 : कि इस में कोई शको शुबा नहीं। 52 : और उस का शुक्र करो कि उस ने तुम्हारी तरफ़ अपने इस कलामे जलील की वह्य फ़रमाई। 1 : सूरए मअरिज मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ, चवालीस 44 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो उन्तीस 929 हर्फ़ हैं। 2 : शाने नुजूल : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने जब अहले मक्का को अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह आपस में कहने लगे कि इस अज़ाब के मुस्तहक़ कौन लोग हैं और येह किन पर आएगा ? सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ